जंगलों के पास रहने से बच्चे क्या सीखते हैं

अंकित शुक्ला

एक जंगल जो मानव गतिविधि से अछूता हो, वह पेड़ों, लताओं और झाड़ियों की कई प्रजातियों के साथ-साथ पक्षियों और जानवरों का घर होता है। हालाँकि, जब पेड़ और पौधे काट दिए जाते हैं, तो न केवल पृथ्वी अपना प्राकृतिक वन आवरण खो देती है, बल्कि ये जानवर अपने प्राकृतिक आवास खो देते हैं और धीरे-धीरे विलुप्त होने लगते हैं। प्राकृतिक वातावरण में मानव घुसपैठ के कई उदाहरण हैं जो इसके सन्तुलन को बिगाड़ देते हैं और अन्ततः इसके क्षरण का कारण बनते हैं। अधिकांश विद्यार्थी कुछ हद तक इन मुद्दों से अवगत हैं, लेकिन तथ्यों को दोहराने, हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में जागरूकता पैदा करने और प्रकृति में सन्तुलन बनाए रखने के लिए हमारे द्वारा क्या-क्या किया जा सकता है इसे बताने के लिए निरन्तर संवाद की आवश्यकता है ताकि प्रकृति बाढ़ और बढ़ते तापमान जैसी प्राकृतिक आपदाएँ लाकर हमारे ख़िलाफ़ न हो जाएँ।

प्रकृति शिविर

नदियों, पहाड़ों और जंगलों आदि के भ्रमण के माध्यम से प्रकृति को समझना, इनके बारे में पुस्तकों में अध्ययन करने की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। तेत्सुको कुरोयानागी की क़िताब *तोत्तो-चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो* में इसका हवाला दिया गया है, जिसमें प्रधानाध्यापक विद्यार्थियों को जंगल में भ्रमण के लिए ले जाते हैं और जंगलों में पाए जाने वाले पेड़ों और अन्य चीज़ों के बारे में उनके विचार सुनते हैं। वे अपने विद्यार्थियों के लिए प्रकृति के ज्ञान के मूल्य को स्पष्ट रूप से समझते हैं।

कहानी से प्रेरणा लेकर हममें से कुछ लोगों, यानी शिक्षक और विशेषज्ञों, ने एक सरकारी स्कूल के कुछ बच्चों के साथ पास के एक जंगल में जाने की योजना बनाई। हमने समर कैम्प के दौरान इस गतिविधि की योजना बनाई। शुरुआत में हमने ड्रॉइंग, पेंटिंग और कविताएँ सुनाने जैसी गतिविधियों के माध्यम से सभी को जानना शुरू किया। बच्चों के साथ सम्बन्ध बनने के बाद, हमने प्रकृति भ्रमण पर जाने का फ़ैसला किया।

भ्रमण के दौरान, हमने पाया कि बच्चे विभिन्न पेड़ों, जल संसाधनों और इनसे सम्बन्धित उन रस्मों-रिवाज़ों के बारे में

चित्र-1 : प्रकृति भ्रमण पर जा रहे विद्यार्थी।

बहुत कुछ जानते थे, जो उनके गाँव में किए जाते हैं। उन्होंने विभिन्न पेड़ों के विशेष गुणों के बारे में बताया जो हमें देखने को मिले। वे जानते थे कि प्रत्येक पेड़ का फल कौन-सा है, उसका उपयोग कैसे किया जा सकता है और वह फल है या सब्ज़ी।

उनका गाँव जंगल के बहुत क़रीब था और पानी जैसे कई संसाधन प्रचुर मात्रा में थे। लगभग हर घर में एक कुआँ था जो काम में आ रहा था। बच्चों ने प्रत्येक कुएँ का नाम उसके पानी के उपयोग के अनुसार रखा था। उदाहरण के लिए सिंचाई के लिए उपयोग किए जाने वाले कुएँ का नाम सिंचन कुआँ रखा गया था।

जंगल से और उनके गाँव से गुज़रकर हमने बच्चों के साथ पेड़ों की उपयोगिता पर चर्चा की। उनके जवाबों ने हमें पूरी तरह से चौंका दिया; वे इतना कुछ जानते थे! वे इस तथ्य से अवगत थे कि उनकी आजीविका उस जंगल पर निर्भर है जिससे उन्हें खाने के लिए फल मिलते हैं। वे महुआ इकट्ठा करते हैं, जो उनकी आय का एक प्रमुख स्रोत है। आय का एक अन्य स्रोत

चित्र-2 : कमल का फल।

तेंदूपत्ता है, जिसका उपयोग बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है। बच्चों को जंगल से पत्ते इकट्ठा करने से लेकर बण्डल बनाने और सुखाने तक की पूरी प्रक्रिया पता थी। बच्चों ने कमल के पौधे के विभिन्न भागों के बारे में भी बताया जो उनके व्यंजनों में उपयोग किए जाते हैं, जैसे कि तना, जिसका उपयोग स्वादिष्ट करी बनाने के लिए किया जाता है और कमल के फूल के अन्दर के छोटे, मीठे बीज।

इसके बाद चर्चा उनके गाँव के चेक डैम पर पहुँच गई। इसके उपयोग और उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की गई — इसका उपयोग सिंचाई और जल संचयन आदि के लिए कैसे किया जाता है। प्रारम्भिक चर्चा में, बच्चों ने साझा किया था कि वे अपनी सिंचाई के लिए नदी के पानी पर कैसे निर्भर हैं, जब आगे और पूछा गया, तो यह पता चला कि वे किसी-न-किसी रूप में सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर हैं।

इन चर्चाओं के बाद हम चेक डैम के पास पिकनिक मनाने गए। उन्होंने खुली आग पर खाना पकाया, जिसके लिए आस-पास से लकड़ी इकट्ठी की गई थी। यह सब करने के क्रम में बच्चों ने उस जगह पर कूड़ा नहीं डाला। उन्होंने अपनी बाड़ी में उगाई जाने वाली सब्ज़ियों का इस्तेमाल किया। हमने पेड़ों की पत्तियों को मोड़कर और टहनियों से गूँथ कर प्लेट बनाई।

चित्र-3 : पिकनिक के लिए तैयार किया जा रहा भोजन।

उन्हें यह सब करते हुए देखकर मुझे एहसास हुआ कि गाँवों में रहने वाले बच्चे पहले से ही एक टिकाऊ ढंग से अपना जीवन जी रहे हैं।

सरकारी योजनाओं से अवगत करवाना

जब छत्तीसगढ़ के वर्तमान मुख्यमंत्री ने पदभार ग्रहण किया, तो उन्होंने राज्य को ऐसे चार प्रतीक दिए जिसकी सभी को रक्षा करना चाहिए — नरवा (जलकार्य), गरवा (पशु धन), घुरवा (खाद बनाने हेतु मवेशियों के गोबर के लिए गड्ढा) और बाड़ी (किचन गार्डन)।

राज्य सरकार का मानना है कि भूजल पुनर्भरण, सिंचाई और जैविक खेती की इस योजना से किसान को दोहरी फ़सल पैदा करने में आसानी होगी, पशुओं की उचित देखभाल सुनिश्चित होगी, पारम्परिक बाड़ियों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूती मिलेगी और सभी के पोषण स्तर में सुधार होगा।

विद्यार्थियों को इस तरह की पहलों से भी अवगत कराया जाना चाहिए जो सीधे उनके गाँवों और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। जिन स्कूलों के साथ हम काम करते हैं उनमें से एक ने पास के गोथान (गायों के रहने की जगह) के शैक्षिक भ्रमण की योजना बनाई है ताकि विद्यार्थी जब अपनी पाठ्यपुस्तकों में इसके बारे में पढ़ें तो वे इससे अच्छे से जुड़ सकें। बच्चों ने भ्रमण किया और वे छोटी-छोटी जानकारियों के बारे में बहुत उत्सुक थे, जैसे कि खाद इतनी आसानी से कैसे बनाई जा सकती है या गाय कैसे दूध देने के अलावा और भी कई तरह से लाभदायी हैं।

इस सब बातचीत के बाद मैं कहूँगा कि गाँवों में रहने वाले बच्चे प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से काफ़ी परिचित हैं। वे इस तरह से जीते हैं जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रकृति का शोषण न हो। यह उनकी आय का मुख्य स्रोत है या उनकी पूरी आजीविका प्रकृति पर निर्भर है। चाहे पेड़ हों या नदियाँ, वे उन्हें संरक्षित करने और बनाए रखने की कोशिश करते हैं ताकि उन्हें प्राकृतिक सम्पदा की निरन्तर आपूर्ति हो और साथ ही प्राकृतिक दुनिया का ह्रास न हो।

चित्र-4 : गौशाला के भ्रमण पर बच्चे।

आभार

लेखक अपने सहयोगियों, स्नेहा और नीरज, को इस समर कैम्प में शामिल करने और इस अनुभव के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।

References

IGNOU Document (Unit 1:

https://www.downtoearth.org.in/hindistory///how-narwa-garwa-ghurwa-will-improve-rural-economy-of-chhattisgarh-65218

अंकित शुक्ला ने उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से एमबीए और बीटेक किया और मार्च 2017 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फ़ैलोशिप प्रोग्राम में शामिल हुए। फ़ैलोशिप पूरी करने के बाद, वे रायगढ़ जिले में पदस्थापित हैं और अब गणित शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में काम करते हैं। उनकी व्यस्तता के कामों में प्रमुख है गणित की अध्ययन सामग्री, दृष्टिकोण और शिक्षणशास्त्र पर मुख्य रूप से ध्यान देते हुए सरकारी स्कूल के गणित शिक्षकों का क्षमता संवर्धन। वे सरकारी स्कूलों के बच्चों से भी संवाद करते रहते हैं। उनसे ankit.shukla@azimpremjifoun_dation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमित कुमार **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय